

DR. OMESH KUMAR BHARTI

Dr. Omesh Kumar Bharti is an Epidemiologist at Slate Institute of Health and Family Welfare (SIHFW), Shimla. The low cost Anti-Rabies protocol developed by Dr Bharti to prevent Rabies has been recently recommended by World Health Organisation (WHO). His research work at Anti-Rabies Clinic and Research Centre at Government run Deen Dyal Upadhayay Hospital, Shimla made the dog/ monkey bite treatment to prevent Rabies affordable to the poor patients.

2. Born on May 10, 1967 at Jwalamukhi town in Kangra district of Himachal Pradesh, Dr. Bharti studied in village Government school. He did his MBBS from Indira Gandhi Medical College, Shimla in 1992. In 2009, he received Masters Degree in Applied Epidemiology (MAE) from National Institute of Epidemiology (NIE), Chennai, affiliated to Indian Council of Medical Research (ICMR). He also did Hospital Management Course from NIHFW, Delhi and South Asia Course on Equity and Health by International People's Health University.

3. Dr. Bharti has served different areas of Himachal Pradesh as Government Doctor for 26 years. He also worked in WHO led National Polio Surveillance Project as Surveillance Medical Officer at Varanasi in 1998-2000. He was an active volunteer in Literacy Mission of Government of India in early 90s. Having grown up in village environs, Dr Bharti was sensitized by deaths due to dog bites and snake bites for lack of awareness and affordability among rural folks. After becoming a doctor, he predominantly took up these two issues for research.

4. Dr. Bharti developed innovative pooling strategy of Himachal in 2008 at the DDU hospital clinic to make Intra-Dermal Anti-Rabies Vaccine (IDRV) affordable to the poor patients, bringing down the cost of vaccination five times. Dr Bharti started research on local wound infiltration of RIG to save lives with the nod of health authorities and laboratory support from the WHO Collaborating Centre for Reference and Research on Rabies, Department of Neurovirology NIMHANS. Bangaluru , to develop low cost protocol.

5. The WHO officials from Neglected Zoonotic Diseases and Communicable Diseases Departments at Geneva personally recognised Dr Bharti's contribution in Rabies bite case management, enabling the WHO review available data and evidence that culminated in updated position of WHO on Rabies prophylaxis in 2018.

6. Dr. Bharti contributed in conceptualization and operations of free of cost 108 emergency ambulance service in HP on sustainable basis. His intervention to keep anti-snake venom in 108 emergency ambulances in Himachal saved many lives and was referenced in WHO guidelines for the Management of Snakebites in 2016. He is presently working on effective snakebite management and prevention of Thalassemia. Dr Bharti has published several research papers in the National and International Journals and has travelled across the world to deliver lectures on his research on Rabies, Snakebites, Hematology, Thalassemia, Disease Outbreaks (Hepatitis-A/Tick Typhus), Non-Polio Viruses and waste management.

7. Dr. Bharti has won several awards for research in Rabies. He was given British Medical Journal's South Asia award for 'Research Paper of the Year' 2018 and Dr Tulsi Das Chugh Award by the National Academy of Medical Sciences. The Association for Prevention and Control of Rabies in India (APCRI) awarded him "Certificate of Merit". He was also awarded Sat Paul Mittal appreciation award, Nathan's Leadership award and Himachal Excellence Award. Dr Bharti is recipient of "Civil Services Award" of Himachal Government, along with others, in 2012 for successful implementation of 108 emergency ambulance projects in HP.

पद्म श्री

डॉ. उमेश कुमार भारती



डॉ. उमेश कुमार भारती राज्य स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान (एसआईएचएफडब्ल्यू) शिमला में महामारी विज्ञानी (एपिडिमिओलोजिस्ट) हैं। हाल ही में रेबीज की रोकथाम के लिए डॉ. भारती द्वारा विकसित कम लागत वाले एंटी रेबीज प्रोटोकॉल की विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ)द्वारा सिफारिश की गई है। सरकार द्वारा संचालित दीन दयाल उपाध्याय अस्पताल, शिमला के एंटी रेबीज क्लिनिक एंड रिसर्च सेंटर में आपके शोध कार्य के परिणामस्वरूप रेबीज की रोकथाम के लिए निर्धन रोगियों के लिए कुत्ते/बंदर के काटने का सस्ता उपचार मुहैया करावाया जाना संभव हो पाया है।

2. 10 मई, 1967 को हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के ज्वालामुखी नगर में जन्मे, डॉ भारती ने गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ाई की। आपने वर्ष 1992 में इंदिरा गांधी मेडिकल कॉलेज, शिमला से एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की।वर्ष 2009 में आपने भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) से संबद्ध राष्ट्रीय एपिडिमिओलोजी संस्थान (एनआईई), चेन्नै से एप्लाइड एपिडिमिओलोजी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। आपने एनआईएचएफडब्ल्यू, दिल्ली से अस्पताल प्रबंधन पाठ्यक्रम तथा इंटरनेशनल पीपल्स हेल्थ यूनिवर्सिटी द्वारा संचालित साउथ एशिया कोर्स ऑन इक्विटी एंड हेल्थ नामक पाठ्यक्रमों का अध्ययन किया।

3. आप विगत 26 वर्ष से सरकारी डॉक्टर के रूप में हिमाचल प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर चुके हैं। आपने 1998 से 2000 तक विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा संचालित राष्ट्रीय पोलियो निगरानी परियोजना में निगरानी चिकित्सा अधिकारी के रूप में वाराणसी में कार्य किया। 90 के शुरुआती दशक में आप भारत सरकार के साक्षरता मिशन के सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं। गांव के माहौल में पले-बढ़े होने के कारण आपको इस बात की जानकारी थी कि जागरूकता तथा धन की कमी के कारण ग्रामीण लोगों की कुत्तों और सांप के काटने से मृत्यु हो जाती है। डॉक्टर बनने के बाद आपने इन दोनों ही क्षेत्रों में अनुसंधान करने का संकल्प लिया।

4. आपने वर्ष 2008 में गरीब रोगियों के लिए इंट्रा-डर्मल एंटी रेबीज वैक्सीन (आईडीआरवी) को सस्ती दरों पर तैयार करने के लिए डीडीयू अस्पताल क्लिनिक में हिमाचल की इनोवेटिवपूलिंग कार्यनीति तैयार की। जिससे इस वैक्सीन की लागत पांच गुना कम हो गई। लो कॉस्ट प्रोटोकॉल विकसित करने के लिए आपने डब्ल्यूएचओ कोलेबरेटिंग सेंटर फॉर रेफरेंस एंड रिसर्च फॉर रेबीज, डिपार्टमेंट ऑफ न्यूरोवायरोलॉजी निमहांस, बंगलूरु से स्वास्थ्य प्राधिकारियों की मंजूरी तथा प्रयोगशाला सम्बन्धी सहायता से लोकल वुंड इन्फिल्ट्रेशन ऑफ आरआईजी के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य शुरू किया था ताकि लोगों की जान बचाई जा सके।

5. जिनेवा स्थित नेग्लेक्टिड जूनोटिक डिसीसिस एंड कम्युनिकेबल डिसीसिस डिपार्टमेंट के डब्ल्यूएचओ अधिकारियों ने रेबीज बाइट केस मैनेंजमेंट के क्षेत्र में आपके योगदान को व्यक्तिगत रूप से मान्यता प्रदान की इससे डब्ल्यूएचओ द्वारा उपलब्ध डाटा और साक्ष्य की समीक्षा हो सकी और 1918 में जिससे रेबीज प्रोफाइलैक्सिस के क्षेत्र में डब्ल्यूएचओ ने अपनी जानकारी को अद्यतन किया।

6. आपने हिमाचल प्रदेश में सतत आधार पर नि:शुल्क 108 आपातकालीन रोगी वाहन सेवा की अवधारणा को मूर्तरूप देने तथा उसके प्रचालन में अपना योगदान दिया।हिमाचल प्रदेशमें 108आपातकालीन रोगी वाहनों में एंटी स्नेक वेनम को रखने के उनके प्रयास से बहुत से लोगों की जीवन रक्षा हुई और सांप के काटने से जीवन बचाने की व्यवस्था करने के लिए डब्ल्यूएचओ दिशानिर्देशों में वर्ष 2016 में उनका उल्लेख है। इस समय आप इफेक्टिव स्नेकबाइट मैनेंजमेंट एंड प्रिवेंशन ऑफ थैलसेमिया के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। आपके कई शोध पत्र राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए हैं तथा आपने रेबीज, स्नेकबाइट, हीमेटोलॉजी,थैलेसीमिया,रोग प्रसार (हेपेटाइटिस-ए/टिक टाइफस) नॉन पोलियो वायरस और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे विषयों पर व्याख्यान देने के लिए विश्व के अनेक देशों की यात्रा की है।

7. आपको रेबीज पर शोध के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपको वर्ष 2018 में 'रिसर्च पेपर ऑफ द ईयर' के रूप में ब्रिटिश मेडिकल जर्नल का साउथ एशिया पुरस्कार तथा राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी द्वारा डॉ. तुलसी दास चुघ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है| एसोसिएशन फॉर प्रिवेंशन एंड कंट्रोल ऑफ रेबीज इन इंडिया (एपीसीआरआई) ने आपको 'सर्टिफिकेट ऑफ मेरिट' से सम्मानित किया है। आपको सत पॉल मित्तल एप्रिसिएशन अवॉर्ड, नाथन्स लीडरशिप अवॉर्ड तथा हिमाचल एक्सीलेंस अवॉर्ड भी प्राप्त हुए हैं। आपको हिमाचल प्रदेश में 108 आपातकालीन एम्बुलेंस परियोजनाओं के सफल कार्यान्वयन के लिए, वर्ष 2012 में हिमाचल प्रदेश सरकार का "सिविल सेवा पुरस्कार" आदि कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।